युरगेन हेबरमॉ : नव मार्क्सवादी विचारक

डॉ0 उत्तरा यादव ,

एसोसिएट प्रोफेसर–समाजशास्त्र विभाग,
महिला कालेज,लखनऊ

शोध सारांश

हेबरमॉ एक प्रमुख जर्मन सामाजिक विचारक है। इनका सम्बन्ध फ्रैंकफर्ट सम्प्रदाय से हैं। कार्ल मार्क्स का प्रभाव इन पर बहुत अधिक था, परन्तु ये उनके आलोचक भी थे, हेबरमॉ का मानना था कि मार्क्स ने अपनी पूरी ताकत आर्थिक निर्धारणवाद पर लगा दी और कभी भी पूंजीवादी समाज में संस्कृति की क्या भूमिका है? इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। उपर्युक्त उपेक्षित क्षेत्र को हेबरमॉ ने अपने लेखन के माध्यम से उजागर किया। प्रस्तुत शोध–पत्र का विवेच्य विषय यह है कि उभरते हुए पूंजीवादी समाज की जटिलताओं को हेबरमॉ ने एक भिन्न दृष्टिकोण से देखा जो परम्परागत मार्क्सवादी चिन्तन से अलग था तथा इन जटिल समस्याओं के निवारण हेतु अपने कुछ मौलिक सुझाव और अवधारणाओं को प्रस्तुत किया। इसमें तार्किक एवं आदर्श सम्प्रेषण के द्वारा सामाजिक समरसता स्थापित करने एवं सार्वजनिक क्षेत्र के ऊपर विचार–विमर्श भी इस शोध–पत्र का विवेच्य विषय है।

Key Words: *नवमार्क्सवादी, पूंजीवादी, मार्क्सवाद, सम्प्रेषण, आर्थिक निर्धारणवाद, प्रत्यक्षवादी विधि, सार्वजनिक क्षेत्र के जीवन, जनता*

हेबरमॉ का जन्म जर्मनी 18 जून 1929 को राईन प्रान्त में हुआ और समकालीन पाश्चात्य दर्शन, समाजशास्त्र, सम्प्रेषण, तार्किकता, सार्वजनिक क्षेत्र, नव उपयोगिता वादी के रूप में आपकी प्रसिद्धि रही। आपके ऊपर कार्ल मार्क्स, बेवर, दुर्खीम, फ्रायड, हीगल, मारटीन, हाईडेगर, एडार्नो, बिट्गेन्सटीन, पर्स आस्टीन आदि विचारकों का व्यापक प्रभाव रहा। बचपन में बोलने की समस्या (होंठ कटे होने) से जूझने के फलस्वरूप सम्प्रेषण की कला पर अनन्त गहराई से विचार करते हुए उन्होंने अनेक नवीन विचार दिये।

हेबरमॉ के अध्ययन में कई बड़ी संस्था एवं विचारकों का योगदान रहा है। संस्था के रूप में फ्रैंकफर्ट का नाम सबसे पहले आता है। जब हम एक विचारक की दृष्टि से हेबरमॉ को देखते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वे अपने समय की समस्याओं से जूछ रहे थे।

हेबरमॉ के अनुसार 19वीं शताब्दी में दो बहुत बड़े विश्वयुद्ध हुए। 1930 में पूरे यूरोप में मन्दी का दौर आ गया। पूंजीवाद पर खतरा दिखाई देने लगा। जर्मनी की नाजी सरकार युद्ध में हार गयी थी। यूरोप की इन समस्याओं का विश्लेषण हेबरमॉ के अध्ययनों में देखने को मिलता है।

नव मार्क्सवादियों के विश्लेषण का केन्द्र बिन्दु कार्ल मार्क्स है। मार्क्सवादी यह मानते हैं कि पूंजीवाद की पहचान और उसकी वृद्धि पूंजीपतियों द्वारा किये गये शोषण पर आधारित है। आज औद्योगिक समाज में तकनीक का जो विकास हो रहा है उसके जड़ में मुनाफाखोरी

प्रत्येक युग में कोई न कोई प्रभावशाली उत्पादन की विधि होती है। इस उत्पादन विधि में कभी मालिक ने गुलाम का शोषण किया है, कभी सामंत ने रैयत का और कभी पूँजीपतियों ने श्रमिकों का। इतिहास की यह सम्पूर्ण चाल, मार्क्स के अनुसार, उत्पादन विधि ने खेला है। मार्क्स ने बड़े स्पष्ट शब्दों में यह कहा है कि उत्पादन विधि ही सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन को निर्धारित करती है। उत्पादन विधि में तकनीकी तथा सामाजिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप द्वन्द्व आ जाते हैं और ये द्वन्द्व ही क्रान्ति को जन्म देते हैं और क्रान्ति के बाद एक नई आर्थिक और सामाजिक संरचना उभरकर आती है। यह मार्क्स के सिद्धान्त का मूल निचोड़ है।

हेबरमॉ संचार, सार्वजनिक क्षेत्र जैसे सिद्धान्तों के निर्माता हैं। वे पूरी ताकत के साथ पूंजीवाद, सामन्तवाद और प्रकीर्णवाद का विरोध करते हैं। सन् 1950 के दशक में पूरी दुनिया में यह बात कही जाती थी और लोग मानने लगे समाजशास्त्र की अध्ययन विधि वैज्ञानिक होनी चाहिए। समाजशास्त्र भी एक विज्ञान है। प्राकृतिक विज्ञानों में जिन विधियों का प्रयोग किया जाता है, उनका प्रयोग समाजशास्त्र में भी होना चाहिए, समाजशास्त्र में प्रत्यक्षवादी विधि के प्रयोग की बात होती है, ऐसा माना जाता है कि यदि समाजशास्त्र में प्रत्यक्षवादी विधि का प्रयोग किया जायेगा तब सावधानीपूर्वक अवलोकन, तुलना और प्रयोग के द्वारा वस्तुनिष्ठ तथ्यों को एकत्र किा जा सकेगा।

इस प्रत्यक्षवादी विचारधारा का खण्डन न केवल हेबरमॉ ने किा बल्कि सम्पूर्ण फ्रैंकफर्ट सम्प्रदाय ने इस विधि को अस्वीकार कर दिया। 1960 के दशक में जर्मनी में जब प्रत्यक्षवादी विवाद (Positivism Dispute) पर एक महत्त्वपूर्ण सम्मेलन हुआ तब एडॉनो और हेबरमॉ ने इसका विरोध किया। उनका कहना था कि **पक्षपात** ने न केवल प्राकृतिक दुनिया बल्कि समाज को समझने में भी हमारी क्षमताओं को सीमित कर दिया है। हेबरमॉ की सबसे बड़ी यह चाहत रही कि समाज विज्ञान की अब परिभाषा बदलनी चाहिए।

हेबरमॉ यह मानते हैं कि विज्ञान और तार्किकता आधुनिक पूंजीवादी युग में मानवीय जीवन में गुणात्मक विकास में बाधक का कारण बन गये हैं। जार्ज लुकावस के बाद आलोचनात्मक सिद्धान्तकार के रूप में हेबरमॉ का नाम आता है। मार्क्सवाद पर वे कहते हैं कि दमन और शोषण की आलोचना मात्र से ही मानव की मुक्ति का मार्ग सम्भव नहीं है। इसके लिए दमन और पूंजीवादी शक्तियों को खोजकर उन पर प्रहार करना आवश्यक है। तभी समाज का उद्धार सम्भव है।

हेबरमॉ के अनुसार विज्ञान प्रौद्योगिकी और संगठन में हुई अप्रत्याशित प्रगति के कारण मानव की तार्किकता का महत्त्व दिन–प्रतिदिन घटता जा रहा है। अब तार्किकता की भूमिका तकनीकी कार्यशीलता तक ही सीमित रह गयी है। अब यह लक्ष्य को प्राप्त करने में नहीं बल्कि मसाधनों की संगठित करने में सहायता करती है जिसके परिणामस्वरूप मानव की तार्किकता स्वतंत्रता का मसाधन न होकर सत्ता एवं प्रभुत्व प्राप्ति का साधन मात्र बन गयी है। अर्थात् मानव के उद्धार के लिए तार्किकता की पुनर्स्थापना आवश्यक है।

हेबरमॉ कहते हैं कि पूंजीवाद के विस्तार के साथ राज्यतंत्र और अधिकारी तंत्र (लालफीताशाही) का विकास और विस्तार हुआ जिससे मानव की स्वतंत्रता का पतन हुआ और वह पराधीन होता चला गया। एक विचारक की दृष्टि से हेबरमॉ के दो बड़े योगदान हैं–

1. **संचार (Communication):** संचार पर उन्होंने विस्तारपूर्वक लिखा है। इस सन्दर्भ में उनकी पुस्तक "The Theory of

Communicative Action, Volume 1 & 2, 1984, 1987" महत्त्वपूर्ण है।

2. **सार्वजनिक क्षेत्र (Public Sphere):** उन्होंने सार्वजनिक क्षेत्र की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया है।

सम्प्रेषण क्रिया (Communicative Action)

मानव जीवन के उद्धार को ध्यान में रखकर हेबरमॉ ने भाषा सम्प्रेषण को और समाज के उद्विकास के सिद्धान्त के तथ्यों को अपनी पुस्तक **"द थ्योरी ऑफ कम्युनिकेटिव एक्शन (1981)"**में प्रस्तुत किया। इस पुस्तक में उन्होंने सम्प्रेषण तथा तार्किकता के सिद्धान्त के विकास की असफलता और निर्धारणवाद के साथ बने रहने के लिए कटु आलोचना की।

हेबरमॉ कहते हैं कि आधुनिक समाज की गतिशीलता को **'व्यवस्था'** (System) के विभेदीकरण के सन्दर्भ में समझा जा सकता है। अपने अध्ययनों में हेबरमॉ "Life World" जीवन जगत का प्रयोग एक अवधारणा केरूपमें करते हैं। आखिर यह जीवन जगत क्या है? हम लोगों से आये दिन मिलते हैं उनसे बातें करते हैं। हेबरमॉ के अनुसार यह दुनिया हमारी संस्कृति से बनी हुई है, हम दीवाली में दीप जलाते हैं और होली में गुलाल लगाते हैं, यह सब संस्कृति को निर्धारित करती है। हमने अपने दैनिक जीवन को भाषा के ताने–बाने में बॉध रखा है। अर्थात् लोगों को अपने **जीवन जगत** में सांस्कृतिक परम्पराओं का ज्ञान होता है, इसमें मूल्य होते हैं, विश्वास होते हैं, हम लोगों के साथ सामंजस्य स्थापित करने का कार्य करते हैं।

तार्किकता की अवधारणा को हेबरमॉ ने बेवर से लिया है, जब व्यक्ति किसी विवेचनात्मक क्रिया को करता है तो वह तर्क का प्रयोग करता है। एक विचारक के रूप में हेबरमॉ एक बहुआयामी विचारक थे। मार्क्स के बारे में वे कहते हैं कि मार्क्स अपनी रचनाओं में मुक्ति की बात करते हैं। वे श्रमिकों को संगठित हो जाने की बात करते हैं क्योंकि बेड़ियों के अतिरिक्त खोने को उनके पास कुछ भी नहीं है। हेबरमॉ कहते हैं कि मनुष्य की दो महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं:–

1. भाषा यानी संचार (सम्प्रेषण)
2. कार्य यानी श्रम

हमारे पारस्परिक क्रियाओं में प्रयोग होने वाली भाषा यदि भ्रामक (Distorted) है तबवह मार्क्स के अनुसार झूठी चेतना है लेकिन यदि पारम्परिक क्रिया में जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है यदि वह भ्रामक नहीं है तभी हम अपने तथ्यों, मूल्यों आदि का अर्थ समझसकते हैं।

हेबरमॉने अपने अध्ययनों में प्रत्यक्षवाद का विरोध किया। वे विज्ञान और तकनीकी दोनों के विरोधी थे, उनका कहना था कि वर्तमान समाज तार्किकता का गुलाम है। प्रत्येक वस्तु बाजार में विज्ञापित किया जाता है। किसी भी वस्तु को चाहे वह उचित अथवा अनुचित है, तार्किकता द्वारा सही बताया जाता है। विज्ञान और तकनीकी के कारण नैतिकता हाशिये पर चली जाती है। इससे नैतिकता का क्षरण होता जाता है। हम विज्ञान के जरिये प्रकृति को भी अपने वश में लाने का प्रयत्न करत हैं। आज के पूंजीवाद ने एक नई विचारधारा को जन्म दिया। लोगों का यह विश्वास बन गया कि सभी समस्याओं का समाधान तकनीकी से हो सकता है। इसका परिणाम यह हुआ कि लोग अराजनीतिवरण हो गये। लोग सब कुछ भूलकर विज्ञान और तकनीकी की ओर देखते हैं।

हेबरमॉकी समाज की अवधारणा मार्क्स से भिन्न है। मार्क्स का कहना था कि आर्थिक संरचना को बदल दीजिये समाज बदल जायेगा। परन्तु हेबरमॉ ऐसा नहीं मानते थे, उनका कहना था सम्प्रेषण क्रिया को बदल दीजिये समाज बदल

जायेगा। मार्क्स समाज में संघर्ष की बात करते हैं लेकिन हेबरमॉ समाज को गतिशीलता के रूप में देखते हैं।

हेबरमॉने समाज के चार प्रकार बताये हैं:–

1. आदिम समाज जिसमें जाति व्यवस्था प्रमुख थी।
2. परम्परागत समाज – जाति और ग्राम स्तर पर सत्ता चलाना।
3. पूंजीवादी समाज – सम्पूर्ण व्यवहार आर्थिक लेन–देन पर चलता है, राज्य की शक्ति कम हो जाती है।
4. उत्तर पूंजीवादी – पूंजीवादी में प्रभाव के बाद उभरा समाज।

मार्क्स का कहना था कि एक दिन क्रान्ति आयेगी जिसमें न राज्य रहेगा और न वर्ग। परन्तु हेबरमॉ क्रान्ति की बात नहीं करते थे वे कहते हैं कि हमें अपने आदर्श सम्प्रेषण समुदाय (प्कमंस ैचममबी ब्वउउनदपजल) में परिवर्तन लाना होगा। आज के समाज में हमें आये दिन संघर्ष देखने को मिलता है। इस संघर्ष को प्रभावी सम्प्रेषण द्वारा रोका जा सकता है। वे सामाजिक परिवर्तन का आधार कोई क्रान्ति या संघर्ष नहीं बल्कि आदर्श सम्प्रेषण को मानते थे। आज के समकालीन समाज राजनीतिक एवं सांस्कृतिक समस्याओं के सन्दर्भ में हेबरमॉ की यह विचारधारा प्रासंगिक हो जाती है।

जब **कार्ल मार्क्स द्वारा समाजवाद** का सिद्धान्त विकसित किया गया तब उन्होंने दो बातें कहीं थीं–**वर्ग** और **विचारधारा**जिसमें वर्ग में वे बुर्जआ और सर्वहारा की बात करते हैं तथा विचारधारा में समाजवाद की परन्तु हेबरमॉजब वर्ग के बारे में विचार करते हैंतो वे कहते हैं कि आज पूंजीवाद इस प्रकार से विकसित हो गया है कि राज्य स्वयं पूंजीवाद हो गया है। अब मजदूरों को भी कुछ सुविधाएँ मिल गयी है वे कुछ संतुष्ट भी नजर आते हैं। अब वर्ग संघर्ष अपने चरम पर ही ऐसा देखने को नहीं मिलता है।

हेबरमॉ कहते हैं कि यदि कोई क्रान्ति आयेगी तो वह क्रान्ति होगी, बढ़ती हुई वैश्विक पूंजीवाद केदुष्प्रभाव के रूप में उभरी **असमानता** अर्थात् जो देश जितना अधिक पूंजीवादी होगा वहअपने से कम पूंजीवादी देशों का शोषण करेगा। जैसे– वैश्विक सन्दर्भ में **उत्तर, दक्षिण, ग्लोब** के अन्तर को समझा जा सकता है। नव उपनिवेशवाद के सन्दर्भों को भी इसी रूप में देखा जा सकता है।

सार्वजनिक क्षेत्र (Public Sphere)

हेबरमॉ ने अपनी पुस्तक **"Structural Transformation of the Public Sphere, 1989"** में सार्वजनिक क्षेत्र के समाज को प्रस्तुत किया। सार्वजनिक क्षेत्र के अन्तर्गत लोगों को अपनी समस्याओं पर सार्वजनिक विमर्श करना चाहिए। जहाँ कहीं दमन और जुर्म हो, इसका सार्वजनिक क्षेत्र में यानी लोगों को संगठित करके विरोध करना चाहिए। ऐसा करने के लिए रीति–रिवाज, परम्परा आदि को भूलकर तार्किकता **(Rationality)** के द्वारा समस्याओं का निराकरण करना चाहिए।

हेबरमॉ ने अपनी पुस्तक **"The Logic of the Social Sciences"** और **"Knowledge & Human Interest"** में ज्ञान की जितनी भी अनुशासन हैं सभी की आलोचना की और कहा कि विज्ञान और तकनीकी हमारी सभी समस्याओं का निदान नहीं कर सकते। हेबरमॉ ने विज्ञान और तकनीकी के द्वारा सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की समस्याओं के लिए जार्ज लुआक्स के द्वारा किये गये सिद्धान्तों को आगे बढ़ाया और सार्वजनिक क्षेत्र के लिए वे नये समाधान देते हुए नजर आते हैं। जब वे कहते हैं कि दमन और शोषण की सिर्फ आलोचना करने से मानव की

मुक्ति की समस्या का समाधान नहीं होने वाला है। इसके लिए दमन और शोषण को उत्पन्न करने वाली शक्तियों को खोजकर उन पर प्रहार करना आवश्यक होगा तभी समाज का कल्याण होगा और मानवीय गरिमा की पुनर्स्थापना हो सकेगी।

सार्वजनिक क्षेत्र हेबरमॉ के अध्ययन का प्रिय क्षेत्र रहा है। वे कहते हैं विचारकों ने सार्वजनिक क्षेत्र को सामाजिक क्षेत्र के स्वरूप के अध्ययन पर बहुत कम ध्यान दिया जिससे इसके कई विशेष बिन्दुओं के बारे में अवधारणाात्मक शून्यता नजर आती है। अपनी पुस्तक **'Between Facts and Norms'** में वे लिखते हैं कि हमने सब कुछ सरकारी तंत्र पर छोड़ दिया, जबकि कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जिनमें जनता को ही पहल करने की आवश्यकता है। अपने अधिकारों के लिए जब तक लोग संगठित नहीं होंगे, उनकी माँगें पूरी नहीं हो सकती। आज जब जनकल्याणकारी सरकारों को आधुनिक वैश्विक पूंजीवाद के साथ तालमेल स्थापित करना पड़ रहा है, तब यह समस्या और गहरे रूप से उभरकर आती है और हेबरमॉ और प्रासंगिक हो जाते हैं। नित्य उभरती नवीन लोकतांत्रिक चेतना जन–आकांक्षाओं के दबाव के रूप में जब सरकारों के समक्ष तीव्र समर्थन विकास के साथ समतामूलक और सतत विकास की मॉग करती है तब हेबरमॉ के सार्वजनिक क्षेत्र का अध्ययन अत्यन्त विशिष्ट हो जाता है।

संदर्भ सूची

1. Habermas Jurgen, The Theory of Communicative Action, Vol. 1 and 2, 1986, 88
2. Modern Sociological Thinkers, S.L. Doshi, Rawat Publications, 2010
3. Sociological Thinkers and Theorists, H.K. Rawat, Rawat Publications, 2009
4. Modernity, Post-modernity and Neo-Sociological Theories, S.L. Doshi, Rawat Publications, 2002.